5.6. सांख्य के अनुसार पुरुष का स्वरूप *(Nature of Purusha or Self according to the Sankhya)*

सांख्यदर्शन के अनुसार प्रकृति और पुरुष दो परमतत्त्व (Ultimate realities) हैं। यहाँ हमें पुरुष के विषय में विचार करना है।

पुरुष का स्वरूप—भारतीय दर्शन में जिसे आत्मा कहा जाता है, उसे ही सांख्य विचारक 'पुरुष' के नाम से पुकारते हैं। आत्मा के स्वरूप को लेकर भारतीय विचारकों में काफी मतभेद पाया जाता है। चार्वाक के अनुसार आत्मा शरीर से भिन्न नहीं है। यह शरीर की भाँति ही भौतिक है। बौद्धदर्शन के अनुसार आत्मा चेतना का प्रवाह (stream of consciousness) है। जैनदर्शन के अनुसार आत्मा नित्य एवं चेतन द्रव्य है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार आत्मा स्वयं अचेतन है। जब इसका संपर्क शरीर, मन एवं इंद्रियों से होता है, तब इसमें चैतन्य का उदय होता है। इस प्रकार, यहाँ चैतन्य आत्मा का आकस्मिक गुण (accidental property) माना गया है। शंकर ने आत्मा को 'सच्चिदानंद' (सत्+चित्+आनंद) कहा है। **भट्टमीमांसकों** ने आत्मा को एक ऐसा पदार्थ कहा है, जो अंशतः अज्ञान से ढका है।

सांख्यदर्शन उपर्युक्त सभी मतों से भिन्न अपना अलग मत देता है। इसके अनुसार पुरुष शुद्ध चैतन्य (pure consciousness) है। यह चैतन्य आत्मा की सभी अवस्थाओं (जागरितावस्था, स्वप्नावस्था और सुषुप्तावस्था) में विद्यमान रहता है। पुरुष स्वयं चैतन्य से प्रकाशित होता है

Scanned with CamScanner

और अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। पुरुष शरीर, मन, इंद्रिय, बुद्धि, अहंकार इत्यादि से भिन्न है। यह निष्क्रिय (passive) एवं अकर्ता (non-doer) है। पुरुष सदैव ज्ञाता (knower) है। यह कभी ज्ञेय (object of knowledge) नहीं बन सकता। यह गुणरहित है। यह नित्य, अनादि एवं अनंत है। यह पुरुष देश और काल (space and time) के परे है। इसमें सुख, दुःख एवं उदासीनता के भाव नहीं पाए जाते; क्योंकि यह गुणरहित है।

सांख्य और न्याय-वैशेषिक मत में अंतर—(a) न्याय-वैशेषिक के अनुसार चैतन्य आत्मा का आगंतुक लक्षण (accidental property) है, न कि स्वाभाविक लक्षण। इसके विपरीत, सांख्य चैतन्य को आत्मा का स्वाभाविक लक्षण मानता है।

(b) न्याय-वैशेषिक आत्मा को सुख, दुःख, राग, द्वेष इत्यादि का आधार बताता है; किंतु सांख्यदर्शन के अनुसार इनका आधार प्रकृति है, न कि आत्मा या पुरुष।

सांख्यमत और वेदांतमत में अंतर—(a) शंकर के अद्वैतवेदांत के अनुसार आत्मा 'सच्चिदानंद' है। इसमें सत् (existence), चित् (consciousness) और आनंद (bliss) तीनों पाए जाते हैं। इसके विपरीत, सांख्यदर्शन आत्मा में केवल चैतन्य मानता है, न कि सत् और आनंद। चैतन्य और आनंद, इसके अनुसार, परस्परविरोधी हैं। आनंद सत्त्वगुण का परिणाम है और पुरुष में कोई भी गुण नहीं है। इसलिए पुरुष में आनंद का अभाव बताया गया है। इसके अतिरिक्त, आत्मा में चैतन्य और आनंद के द्वैत से बचने के लिए भी सांख्यदर्शन में आनंद को पुरुष का स्वाभाविक लक्षण नहीं माना गया है।

(b) शंकर के अनुसार आत्मा एक है; किंतु सांख्य के अनुसार आत्मा या पुरुष अनेक हैं।

(c) शंकर अनेकता को असत्य एवं एकता को सत्य मानते हैं। इसके विपरीत, सांख्य अनेकता को सत्य (real) मानता है।

सांख्य, बौद्ध एवं चार्वाक मतों में अंतर—चार्वाक के अनुसार आत्मा भी शरीर से अभिन्न होने के कारण भौतिक है; किंतु सांख्य के अनुसार आत्मा या पुरुष शरीर से भिन्न होने के कारण अभौतिक हैं। बौद्ध-दार्शनिक आत्मा को 'चेतना का प्रवाह' (stream of consciousness) बताते हैं। किंतु, सांख्य आत्मा को अपरिवर्तनशील एवं नित्य मानता है।

5.7. पुरुष के अस्तित्व के लिए सांख्य के तर्क *(Sankhya Arguments for the Existence of Purusha)*

सांख्यदर्शन में पुरुष के अस्तित्व के लिए निम्नांकित प्रमाण दिए जाते हैं—

(a) संसार के सभी सावयव पदार्थ दूसरों के लिए हैं। इनका अपना कोई लक्ष्य नहीं होता। भौतिक पदार्थों का अपना कोई लक्ष्य नहीं होता। फिर ये किसके लक्ष्य की पूर्ति के लिए हैं? सांख्यदर्शन का उत्तर है कि ये निश्चय ही पुरुष के लक्ष्य की पूर्ति के लिए हैं। इससे पुरुष का अस्तित्व सिद्ध होता है। यदि भौतिक द्रव्यों को भौतिक द्रव्यों की उद्देश्यपूर्ति का साधन माना जाए, तो 'अनवस्थादोष' हो जाता है। इस दोष से बचने के लिए इन सावयव पदार्थों को पुरुष के लक्ष्य की सिद्धि का साधन मानना आवश्यक है। यह प्रयोजनात्मक (teleological) प्रमाण है।

(b) विश्व की सभी वस्तुएँ तीन गुणों (सत्त्व, रज और तम) के कारण सुख, दुःख एवं उदासीनता के भाव रखती हैं। इन गुणों के भावों का अनुभव करनेवाला कोई अवश्य होगा। पुरुष इन गुणों का साक्षी (seer) है और स्वयं इन गुणों से परे है। यह तार्किक प्रमाण (logical proof) है।

(c) प्रकृति स्वयं अचेतन है। यह स्वयं विश्व का विकास-कार्य नहीं कर सकती। प्रकृति और इसके विकारों (जैसे महत्, अहंकार, मन इत्यादि) के संचालन के लिए एक चेतन सत्ता को मानना आवश्यक है। यह सत्ता पुरुष है। इस प्रकार प्रकृति के संचालक के रूप में पुरुष का अस्तित्व मानना अनिवार्य है। पुरुष सभी पदार्थों का अधिष्ठाता है। यह तात्त्विक प्रमाण (ontological proof) है।

Scanned with CamScanner

(d) विश्व की सभी वस्तुएँ भोग की वस्तुएँ हैं। प्रकृति अचेतन होने के कारण इनका भोग नहीं कर सकती। प्रकृति तो स्वयं भोग्या है, इसलिए इसके भोक्ता के रूप में पुरुष की सत्ता स्वीकार करना आवश्यक है। यह नैतिक प्रमाण (ethical or moral proof) है।

(e) चार्वाक के सिवा अन्य भारतीय विचारक मोक्ष (liberation) को जीवन का चरम लक्ष्य मानते हैं। यह एक दुःखविहीन अवस्था है। प्रकृति न तो मोक्ष की कामना कर सकती है और न इसकी प्राप्ति में ही समर्थ है; क्योंकि यह अचेतन एवं जड़ात्मक है। इसके लिए एक चेतन एवं अशरीरी सत्ता की आवश्यकता है। यह सत्ता पुरुष है। पुरुष ही मोक्ष की कामना करता है और इसी को मोक्ष मिलता है। यहाँ मुख्य प्रश्न है—मोक्ष किसके लिए ? सांख्य का उत्तर है—पुरुष के लिए। इस प्रकार, मोक्ष की सार्थकता सिद्ध करने के लिए पुरुष का अस्तित्व मानना आवश्यक है। यह धार्मिक प्रमाण (religious proof) है।

पुरुष की सत्ता सिद्ध करने के बाद प्रश्न उठता है—पुरुष एक है या अनेक ? सांख्य का उत्तर है कि पुरुष अनेक हैं। इसके लिए दर्शन में कई युक्तियों का सहारा लिया गया है।

5.8. पुरुष की अनेकता के लिए सांख्य के प्रमाण *(Sankhya Arguments for the Plurality of Purusha)*

सांख्य ने पुरुष की अनेकता सिद्ध करने के लिए यथानिर्दिष्ट प्रमाणों को उपस्थित किया है—

(i) सभी मनुष्यों के जन्म-मरण के समय अलग-अलग होते हैं। उनकी आत्माएँ भी अलग-अलग होती हैं। यदि आत्मा एक होती, तो एक व्यक्ति के मरने पर सबकी मृत्यु हो जाती और एक स्त्री के गर्भवती होने से सभी स्त्रियाँ गर्भ धारण कर लेतीं। इसी प्रकार, एक व्यक्ति के जन्म लेने से सभी व्यक्ति जन्म धारण कर लेते। किंतु, ऐसा नहीं होता। इसी प्रकार, कोई बहरा होता, तो सभी व्यक्ति बहरे हो जाते। किंतु, ऐसा नहीं होता। इससे आत्मा की अनेकता सिद्ध होती है।

(ii) अगर सभी जीवों में एक आत्मा रहती, तो एक की क्रियाशीलता से सभी जीवों में क्रियाशीलता उत्पन्न हो जाती। उदाहरणार्थ, एक ही व्यक्ति के हँसने से सभी हँसने लगते, एक के टहलने से सभी व्यक्ति टहलने लगते। किंतु, ऐसा नहीं होता। एक ही समय कुछ जीव सोए रहते हैं, तो अन्य क्रियाशील रहते हैं; कुछ हँसते हैं तो कुछ रोते हैं। इससे सिद्ध होता है कि पुरुष एक नहीं, बल्कि अनेक हैं।

(iii) विश्व के सभी व्यक्तियों में तीनों गुण (सत्त्व, रज और तम) अलग-अलग पाए जाते हैं। किसी में सत्त्वगुण प्रमुख है, किसी में रजोगुण प्रमुख है, तो किसी में तमोगुण की प्रधानता है। कोई व्यक्ति सात्त्विक है, तो कोई राजस है और कोई तामसिक है। यदि आत्मा एक होती, तो फिर व्यक्तियों में गुणों के आधार पर ऐसी भिन्नता नहीं रहती। इससे आत्मा की अनेकता सिद्ध होती है।

(iv) विभिन्न जीवयोनियों में अंतर भी पुरुष की अनेकता सिद्ध करता है। मनुष्य जानवरों से श्रेष्ठतर और देवों से निम्नतर समझे जाते हैं। यदि आत्मा एक होती तो फिर इन जीवयोनियों में ऊँच-नीच का अंतर नहीं रहता। इससे आत्मा की अनेकता प्रमाणित होती है।

आलोचना—सांख्य के पुरुष-संबंधी मत के कई दोष पाए जाते हैं। वे कुछ दोष निम्नलिखित प्रकार के हैं—

(a) सांख्य ने पुरुष की परिभाषा देकर प्रशंसनीय कार्य किया है। इसके अनुसार पुरुष नित्य एवं अविनाशी है। किंतु, सांख्य ने इसके विषय में जन्म-मरण की बात करके अपने दर्शन में असंगति का दोष उत्पन्न कर दिया है। नित्य एवं अविनाशी पुरुष के साथ जन्म-मरण का प्रश्न ही नहीं उठता।

(b) सांख्य ने पुरुष को निष्क्रिय (passive) कहा है। किंतु, इसकी सत्ता सिद्ध करने के क्रम के इसे भोक्ता (enjoyer) कहा गया है। निष्क्रिय पुरुष भोक्ता नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार, यह निष्क्रिय होने के कारण प्रकृति एवं इसके विकारों का संचालक भी नहीं बन सकता।

Scanned with CamScanner

(c) सांख्यदर्शन में पुरुष को ज्ञानेंद्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार इत्यादि से भिन्न माना गया है। किंतु, पुरुष की अनेकता प्रमाणित करने में इंद्रिय, मन, अहंकार इत्यादि का सहारा लिया गया है। ऐसा करना सांख्यदर्शन को शोभा नहीं देता।

(d) यदि सभी पुरुष शुद्ध चैतन्य हैं तो फिर गुणात्मक अंतर नहीं रहने से इन्हें अलग-अलग रखना संभव नहीं है। यदि पुरुषों में शुद्ध चैतन्य है, तो फिर इन्हें अनेक कैसे कहा जा सकता है ?

(e) यदि सांख्य के अनुसार पुरुष असीम, अविनाशी, नित्य, अनौपाधिक सत्ता है, तो फिर यह अनेक नहीं हो सकता। एक से अधिक होने पर पुरुष सीमित हो जाता है, इसलिए पुरुष अनेक नहीं कहा जा सकता।

(f) वास्तव में सांख्य द्वारा दिए गए अधिकांश प्रमाण जीवों (empirical selves) की सत्ता एवं अनेकता सिद्ध करते हैं, न कि पुरुष (transcendental self) की। इसलिए सांख्य द्वारा प्रस्तुत प्रमाण जीवों के विषय में ही सत्य उतरते हैं, न कि पुरुष के विषय में।

Scanned with CamScanner